रात ज्यों-त्यों करके कटी , सबेरा हुआ । लड़के को कुछ भरोसा हुमा कि शायद शेर उसे छोड़कर चला जाए । मगर शेर ने हिलने का नाम तक न लिया । सारे दिन वह उसी पेड़ के नीचे बैठा रहा । शिकार सामने देखकर वह कहाँ जाता । पेड़ पर बैठे-बैठे लड़के की देह अकड़ गई थी , भूख के मारे बुरा हाल था , मगर शेर था कि वहाँ से जौ भर भी न हटता था । उस जगह से थोड़ी दूर पर एक छोटा-सा झरना था । शेर कभी-कभी उस तरफ ताकने लगता था । लड़के ने सोचा कि शेर प्यासा है । उसे कुछ आस बंधी कि ज्यों ही वह पानी पीने जाएगा , मैं भी यहाँ से खिसक चलूँगा । आखिर शेर उधर चला । लड़का पेड़ पर से उतरने की फिक्र कर ही रहा था कि शेर पानी पीकर लौट आया । शायद उसने भी लड़के का मतलब समझ लिया था । वह आते ही इतने जोर से चिल्लाया और ऐसा उछला कि लड़के के हाथ-पाँव ढीले पड़ गये , जैसे वह नीचे गिरा जा रहा हो ।